प्रस्तावना

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में साल्हावास खंड (जिला झज्जर) की आवास योजना का पुरातात्विक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य में झज्जर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक स्थिति, पुरास्थलों की आवास-योजना, सांस्कृतिक सामग्री एवं सांस्कृतिक परिवर्तन पर प्रकाश डाला गया है। साल्हावास खंड अर्ध-शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर में सरस्वती-दृषद्वती नदी, दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां तथा पश्चिम में थार के मरुस्थल से घिरा हुआ है। इन पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का अध्ययन कर इनका काल निर्धारण किया गया है जिससे यह पता चला कि इस क्षेत्र में सर्वप्रथम निवास करने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पा कालीन संस्कृति थी। प्रस्तुत शोध प्रबंध में झज्जर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला गया है जिससे प्राचीन समय में इस क्षेत्र में बसने वाली संस्कृतियों के विषय में जानकारी मिलती है। इस शोध कार्य में साल्हावास खंड की भौगोलिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला गया है जो कि आवास योजना के अध्ययन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी संस्कृति के उदय एवं विकास में उस क्षेत्र की पारिस्थितिकी तंत्र एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि की अहम भूमिका होती है। अत: भौगोलिक पृष्ठभूमि का अध्ययन कर प्राचीन संस्कृतियों की आवास योजना के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गयी है। साल्हावास खंड के अंतर्गत आने वाले 38 गांव का सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप कुल 45 पुरास्थल प्रकाश में आए हैं। इस लघु शोध प्रबंध में पुरास्थलों की आवास योजना का अध्ययन क्षेत्रफल, मृदा, स्वरूप, और जनसंख्या के आधार पर किया गया है। इसके अतिरिक्त पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन बादली, लोहट एवं अन्य उत्खनित पुरास्थलों से किया गया है। इस लघु शोध प्रबंध में सर्वेक्षण के दौरान मिले पुरास्थलों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी है। इसके अतिरिक्त पुरास्थलों से मिली सांस्कृतिक सामग्री का अध्ययन भी किया गया है। सांस्कृतिक सामग्री के आधार पर प्रत्येक पुरास्थल का काल-क्रम निर्धारण कर उसमें आए सांस्कृतिक परिवर्तन पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। शोध कार्य के अंतर्गत साल्हावास खंड ही नहीं अपितु झज्जर जिले की सभी प्राचीन संस्कृतियों के सांस्कृतिक क्रम को चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

स्वाति राव

आभारोक्ति

प्रस्तुत शोध-प्रबंध सहायक प्राध्यापक डॉ. नरेन्द्र परमार, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं प्रेरणा से पूरा हुआ है। विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यो में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने शोध निर्देशक के रूप में मेरा जो मार्गदर्शन किया है उसके लिए मैं सर्वथा आभारी रहूँगी। उनके मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के अभाव में मेरे लिए इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण कर पाना संभव नही था। मैं विशेषकर डॉ. अमर सिंह के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूँगी। उन्होनें अपना कीमती समय निकालकर पुरास्थलों का सांस्कृतिक काल-क्रम निर्धारित करवाया एवं सम्पूर्ण लघु शोध प्रबन्ध की जाँच करते हुए शोध में आई त्रुटियों को सुधारने में सहायता की। मैं विभाग के अन्य प्राध्यापक डॉ. विनय कुमार राव, डॉ. अभिरंजन कुमार, डॉ. ईश्वर परिड़ा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग देकर अनुग्रहित किया।

मैं इतिहास एवम् पुरातत्व विभाग के सभी छात्र-छात्राओं एवम् शोधकर्ताओं का आभार व्यक्त करती हूँ। मैं मेरे परिवार के सभी सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग के बिना शोध कार्य को पूर्ण करना संभव नहीं था। शोध-प्रबंध के दौरान परिवार के सभी सदस्यों ने मेरा मनोबल बनाये रखा। मैं मेरे पापा राकेश कुमार, मम्मी सविता यादव, भाई आशु राव व प्रांशु यादव, दादी सरस्वती देवी का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। इसके आलावा मैं मेरे दोस्त महेश कुमार का सहृदयता आभार व्यक्त करती हूँ जिसने सर्वेक्षण के दौरान मेरी हर संभव सहायता की।

स्वाति राव